कृष्ण अवतार में परिवर्तन क्यों नहीं हो पाया?

परम शांति... आज मैं बेहद के बच्चों को यह समझाना चाहता हूं कि कृष्ण अवतार में जो विश्व परिवर्तन का कार्य था। वो ही लक्ष्य लेकर भी कृष्ण अवतार वैसे तो हुआ था। परिवर्तन का कार्य वो क्यों नहीं हो पाया। क्योंकि कृष्ण अवतार में जो द्वारिका बनाई थी। सोने की द्वारिका बनाई थी माना पहले-पहले जो बनाई थी। विश्वकर्मा के द्वारा बनवाई गई थी। तो विश्वकर्मा के द्वारा बेहद के विश्व के पीएम ने पावर देकर। विश्वकर्मा को एक संकल्प मात्र से सोने की द्वारिका बनाई थी। उसने सागर देवता को बोला था कि तुम सागर का पानी हटा दो। उसी टाइम पर सभी देवता थे। वायु देवता, जल देवता, अग्नि देवता सब देवता थे। इंद्र देव भी थे। उसी टाइम स्वर्ग भी था। तो उसी टाइम पर जो परम तत्त्व की जो सोने की द्वारिका बनाई, परम तत्त्व की और जो परम तत्त्व की दुनिया, एक संकल्प मात्र से सोचा और बन गई। तो विश्वकर्मा ने एक संकल्प किया और बन गई। एक संकल्प मात्र से बन गई। तो वो परम तत्त्वों की जो सोने की द्वारिका कहते हैं, परम तत्त्वों की। परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि की बनी हुई थी। तो उसका कलर जो था। वो गोल्डन वायुमंडल का कलर था। वो गोल्डन कलर था। इसलिए सोने की द्वारिका कहते थे। जिन्होंने देखा होगा। ऋषि-मुनियों ने, सब ने देखा था। मगर वो समझ नहीं पाए थे। यह कौन सी, कैसी दुनिया है। कोई भी नहीं समझ पाया था। तो वो फिर क्या हुआ कि कृष्ण मथुरा का राजा बना मतलब वो बना नहीं। मगर मथुरा में जब आकर कंस का वध किया। अपने मामा कंस को मार डाला। तब कंस का जो ससुर था। वो जरासंध था और जरासंध बार-बार मथुरा पर हमला करता रहा। बार-बार कृष्ण उसको हराता रहा। 17 बार उसको हराया और 18 वीं बार जब आया। जरासंध बार-बार सेना इकट्ठी करके मथुरा पर हमला करने आ जाता था। तो कृष्ण ने सोचा। मैं जब तक यहां रहूंगा। यह हमला करता रहेगा और उसको मैं मार नहीं सकता। उसको बाद में पता हो। जिन्होंने महाभारत देखा हो। तो जरासंध को भी भीम के द्वारा मरवाया था, उसने और जरासंध की कैद से काफी 16000 रानियों को छुड़वाया था, उसने भीम के द्वारा। क्योंकि जरासंध को वरदान था। इसलिए कृष्ण उसको मार नहीं सकता था। इसलिए वह रणछोड़ बन गया। रण का मैदान छोड़कर वह चला गया और उसको बेहद के पीएम ने सोने की द्वारिका बना दी और उसने मथुरा वासियों को लाकर उसने बसाया, सबसे पहले जो। क्योंकि मथुरा में जो कृष्ण को मानते थे। आधे से ज्यादा कृष्ण को मानते थे। तो उनको रात को स्वपन में ही उठाकर वहां सोने की द्वारिका में लाकर रख दिया और मथुरा जैसा ही एक शहर जैसा बना दिया। मथुरा शहर में ही हैं, ऐसी अनुभूति हुई। उसका घर सब कुछ सेम टू सेम बना दिया। वहां रातों-रात रख दिया। ताकि मथुरा में जो जरासंध ने हमला करके ले लिया था। तो मथुरा वासी जो कृष्ण को मानते थे, उसको बचाने के लिए। तो इसी तरह, वो धीरे-धीरे करके आप सारे जानते हैं। महाभारत में क्या हुआ। तो धीरे-धीरे करके सोने की द्वारिका के अंदर ऐसे मनुष्य आने लगे। फिर कृष्ण ने ओर भी 16108 रानियों से शादी की।

उसके रूप निकाले। कृष्ण ने 16108 रूप निकाले। फिर उससे बच्चे हुए। फिर बच्चों के बच्चे हुए। वो जो परम तत्त्व जो थे, धीरे-धीरे। यह जो मनुष्य अंदर सोने की द्वारिका में रहने लगे। तो उनकी नेगेटिव सोच के कारण वो परम तत्त्व धीरे-धीरे तीन तत्त्वों में और धीरे-धीरे वो स्थूल तत्त्वों में कन्वर्ट हो गए। जो सोने की द्वारिका परम तत्त्वों की द्वारिका थी। वो स्थूल द्वारिका बन गई। स्थूल द्वारिका बनने के कारण जल, मिट्टी की बन गई। कारण, फिर बाद में जब बेहद के पीएम को पता लगा। तो काम उल्टा हो गया। सब को परिवर्तन करके, सब को ज्ञान देकर, ऊपर लाना था। परम तत्त्व की दुनिया बनाने थी। मगर यह तो परम तत्त्व को ही इन्होंने तत्त्वों में कन्वर्ट कर लिया। तो परम तत्त्व - तत्त्वों में कन्वर्ट हो गए। कुछ हुआ नहीं। सारा प्लान, कृष्ण अवतार का सारा प्लान फेल हो गया। तो बेहद के पीएम ने, बेहद के छोटू राम को बोल दिया कि यह सब बाइंडअप कर लो। इसलिए फिर छोटूराम ने सोने की द्वारिका जो है। उसको बाइंडअप कर ली। सागर को वापिस कर ली। सागर में डुबो दी। सब जानते ही हैं। फिर जो हुआ। वो तो विष्णु पुराण में लिखा है, पढ़ लेना बाद में। जो तो क्यों नहीं हुई। यह सोने की द्वारिका जो थी। वो मैं बहुत समय से, जब से ज्ञान में चलता। तो कृष्ण अवतार हुआ। सोने की द्वारिका क्यों नहीं। तो परिवर्तन का लक्ष्य, तो उसी टाइम पर भी था। मगर अभी मुझे बहुत समय के बाद सोचते-सोचते मुझे इसके प्रश्न का जवाब मुझे नीरू ने दिया, ऊपर जाने के बाद। नीरू ने बोला कि जो सोने की द्वारिका बनाई थी। वो जो परम तत्त्व थे। वो एक कला के परम तत्त्व थे। एक कला के पावर की क्वालिटी के परम तत्त्व थे। एक कला की क्वालिटी का पावर था और एक कला की क्वालिटी के परम तत्त्व। तो

परम लाइट में से परम तत्त्व जो बनते हैं। तो, वो तो ना के बराबर होते हैं। कुछ भी नहीं होता। वो तो धीरे-धीरे, वो स्थूल तत्त्वों में। क्योंकि नेगेटिव सोच है। तो वो परम तत्त्व, तीन तत्त्वों में परम आकाश, परम वायु, परम अग्नि, तीन तत्त्वों में और बाद में पांच तत्त्वों में कन्वर्ट हो जाते हैं। वो ही हमेशा हर ब्रह्मांड में हुआ है। पहले परम तत्त्वों की दुनिया बनी, हर ब्रह्मांड में। फिर बाद में वो ही सब परम तत्त्वों से तीन तत्त्वों की दुनिया और तीन तत्त्वों से फिर स्थूल दुनिया बन गई, हमेशा। तो बहुत ही अभी मतलब क्वालिटी, एक कला की पावर की क्वालिटी अभी कम है। तो ऊपर सब रिसर्च वर्क नीरू कर रही है कि कितने कला का कहां-कहां, कितने कला का पावर डाला जाए। वो सब रिसर्च वर्क चालू है। मल्टीवर्स को बदलने के लिए कितनी कला का पावन चाहिए। क्योंकि पहले एक कला का पावर। तो हम डालकर एक्सपेरिमेंट कर चुके हैं। -17 कला से 0 कला तक पूरे मल्टीवर्स में डाला था। एक कला का पावर, तो सुक्ष्म जगत की आत्माएं ही, एक कला का पावर तो थोड़े समय में ही चूस गई थीं और वो नेगेटिव आत्माएं जब पावर चुस्ती हैं। तो ओर नेगेटिव होकर विकर्म करती हैं। तो एक साथ में ही 10 कला का पावर डालकर। अगर पूरे मल्टीवर्स को बदल दिया जाए। उसका पूरा ऊपर से काम हो रहा है। सब इन्वेस्टिगेशन हो रहा है। सब ऑब्जर्वेशन कर रहे हैं। कितनी कला का पावर कहां-कहां, क्यों डालना है। सब काम चालू ही है। सब कर रहे हैं। तो मुझे भी नहीं पता था कि यह सोने की द्वारिका परिवर्तन, कृष्ण अवतार का मतलब क्यों सार्थक नहीं हुआ, कृष्ण अवतार का। जो अवतार था। वो परिवर्तन का था। तो परिवर्तन क्यों नहीं हुआ। सोने की द्वारिका माना परम तत्त्व की द्वारिका भी क्यों स्थूल मिट्टी की बन गई और बाद में उसको क्यों विनाश। कृष्ण को भी अपने कुल का विनाश क्यों करना पड़ा। पूरे कुल का विनाश किया। तो यह सब बहुत गहरी बातें हैं। जो बेहद की आत्माएं हैं। वो ही जानेंगे। जिन्होंने सारे वीडियोस देखे हैं, सोचे हैं, समझे हैं। वो ही जान पाएंगे। वाकी तो यह ज्ञान आम लोगों के लिए नहीं है। पहले भी मैं कह चुका हूं। जो बेहद की आत्माएं हैं। जिन्होंने सारे मेरे आगे की वीडियोस देखे हैं, सोचे हैं, समझे हैं और विचार सागर मंथन किया। ज्ञान सागर में बार-बार मंथन करते रहते हैं। तो यह बातें समझ में आएंगी। अति गुहिया बातें हैं। कोई स्थूल शास्त्रों में बातें लिखी नहीं हैं, सब बातें। जो बातें शास्त्रों में नहीं लिखी हैं। वो बातें मैं बता रहा हूं। अति गुहिया बातें, अति सुक्ष्म बातें बता रहा हूं। परम शांति...